दिव्य लीलामृत

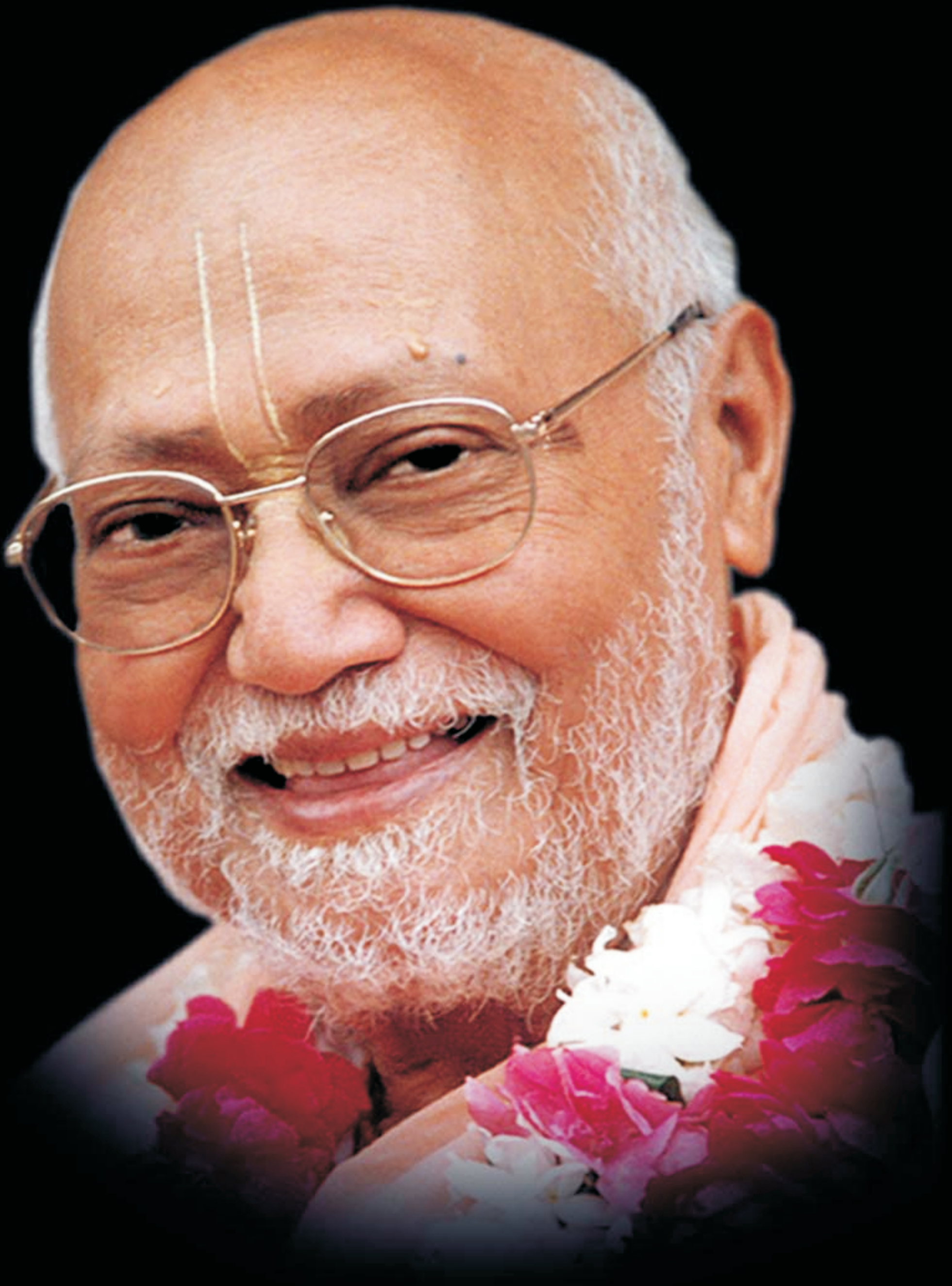

कोलकाता मठ में श्रीवास-आंगन का अवतरण

SGD

“निष्कपट होकर, हृदय की गहराई से निरंतर कृष्ण कीर्तन करने से मन स्थिर हो जाएगा और हृदय में श्रीगुरु की नित्य उपस्थिति अनुभव होगी”

श्रीलगुरुदेव

SGD

"श्रीकृष्ण संकीर्तन ही
सर्वश्रेष्ठ आश्रय है।"

श्रीलगुरुदेव

SGD

श्रीलगुरुदेव

SGD

श्रील गुरुदेव संकीर्तन-प्रिय हैं—अर्थात् कीर्तन उन्हें अत्यंत प्रिय हैं। अपनी सम्पूर्ण भौम-लीला में, उन्होंने आंतरिक रूप से चिन्मय नाम की मधुरता का निरंतर आस्वादन करते हुए दिव्य आनंद का अनुभव किया, चाहे उनकी बाहरी स्थिति कैसी भी क्यों न रही हो। पहले, अपनी आचार्य लीला में, वे स्वयं संकीर्तन करते हुए पूर्ण रूप से

उसमें तन्मय हो जाते थे और भावावेश में नृत्य करने लग जाते थे। उस समय उन्हें शरीर का कोई बाहरी ज्ञान नहीं रहता था। अपने प्रकट लीला के अंतिम साढ़े तीन वर्षों में, वे निरंतर अपने गुरुवर्ग के संकीर्तन को आंतरिक रूप से आस्वादन करते रहे। उस समय उनके अप्राकृत शरीर में चिन्मय विकार प्रकट होते थे, जैसे नेत्रों से अश्रु-धारा प्रवाहित होना, शरीर का अचानक स्तब्ध हो जाना और उनके दिव्य अंगों से सुगंध

प्रसारित होना, इत्यादि। और अब इस धरातल से अपनी लीला संवरण करने के संकेत देकर, उन्होंने सभी भक्तों को उच्च स्वर से संकीर्तन करने के लिए हृदय में प्रेरित किया। और, स्वयं उस संकीर्तन में सम्पूर्ण रूप से तल्लीन हो जाने के कारण उनकी सभी बाह्य इंद्रियाँ पूरी तरह से स्तब्ध हो गयीं। *

जब चित्त के प्रांगण में 'कृष्ण' नाम के दो अक्षर उदित होते हैं, तब वे समस्त इन्द्रियों

की क्रिया पर विजय प्राप्त कर लेते हैं, अर्थात् सभी इन्द्रियाँ निष्क्रिय हो जाती हैं। (श्रीचैतन्य चरितामृत, अन्त्य-लीला, 1/99)

अप्रैल 14 की रात्रि से, श्रील गुरुदेव ने उनके स्वास्थ्य की चिंता कर रहे सभी भक्तों का ध्यान कीर्तन-भक्ति पर केंद्रित करवा दिया और वे उत्साह के साथ कीर्तन करने लगे। श्रील गुरुदेव के अत्यंत प्रिय कीर्तन-राधा-कुण्ड-तट कुञ्ज

कुटीर–को दिन में कई बार गाया जाता था। एक क्षण भी कीर्तन की ध्वनि के बिना व्यतीत नहीं होता था। भक्तों के दु:ख और चिंता भरे हृदय को अविरत संकीर्तन की ध्वनि शीतलता प्रदान करती थी। पूरा वातावरण आध्यात्मिक स्पंदनों से भर गया था। हमें अनुभव हो रहा था कि हम ऐसे किसी स्थान पर हैं जो इस जगत् का कोई भाग ही नहीं है। उन दिनों का स्मरण करने मात्र से ही व्यक्ति पवित्र हो जाता है। इस लीला के द्वारा श्रील

गुरुदेव के ये सन्देश स्पष्ट थे—1) निष्कपट होकर, हृदय की गहराई से निरंतर कृष्ण कीर्तन करने से मन स्थिर हो जाएगा और हृदय में श्रीगुरु की नित्य उपस्थिति अनुभव होगी; 2) श्रीकृष्ण संकीर्तन ही सर्वश्रेष्ठ आश्रय है।

उन दिनों, केवल कोलकाता मठ में ही नहीं, किन्तु पूरे विश्व में भक्तों के, 'हा गुरुदेव! हा गुरुदेव! जय गुरुदेव! जय गुरुदेव!' के

जयकारे गूंजने लगे। विश्व के विभिन्न स्थानों से कई भक्त संकीर्तन में सम्मिलित होते थे—कोई कोलकाता मठ में पहुँच कर, तो कोई live webcast के माध्यम से। भिन्नभिन्न देशों में रहने वाले कई अन्य भक्त अपने-अपने स्थान में ही संकीर्तन करने के लिए एकत्रित होते थे। हम अनुभव कर पा रहे थे कि श्रील गुरुदेव बिना किसी बाह्य आदान-प्रदान के शय्या पर लेटे हुए दिखाई देने पर भी वे हमें हमारे पूर्व आचार्यों के द्वारा

प्रकाशित अत्युत्तम मार्ग—कीर्तनीयः सदा हरिः—पर अग्रसर होने के लिए हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं।

यद्यपि श्रील गुरुदेव पहले से ही शारीरिक आवश्यकताओं से परे थे, तथापि अभी तक वे उन्हें केवल हमें सेवा के अवसर प्रदान करने के लिए स्वीकार कर रहे थे। किन्तु 15 अप्रैल से, उन्होंने अपना नियमित आहार और दवाई लेना भी बंद कर दिया। उनके हृदय की धड़कन लगातार धीमी

होती जा रही थी और शरीर के कई आतंरिक अंग अपने–अपने कार्यों से निवृत्त होने लगे। फिर भी, उनके अप्राकृत शरीर पर दिव्य कांति और चेहरे पर अलौकिक प्रसन्नता दिखाई दे रही थी। इस दृश्य ने पास में बैठे हुए चिकित्सकों का ध्यान आकर्षित किया। वे कहने लगे कि उन्होंने अपने जीवन में पहले कभी इस तरह का अनुभव नहीं किया। उन्होंने अनुमान लगाया कि श्रील गुरुदेव भक्तों के द्वारा किए जा रहे कीर्तन पर अपनी

प्रसन्नता व्यक्त करते हुए ही ऐसी अनोखी लीला प्रदर्शन कर रहे हैं। इतना ही नहीं, उन्होंने हमसे अनुरोध किया कि हम कीर्तन को बंद न करें, क्योंकि उन्हें लगा कि कीर्तन ही श्रील गुरुदेव के आहार और चिकित्सा की भूमिका निभा रहे थे।

पहले हमने श्रील गुरुदेव के मुखारविंद से कई बार श्रवण किया था कि जब श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत उठाया, तब व्रजवासी भक्त उनके सर्वांग

सौंदर्य से इतने मुग्ध हो गए कि उन्हें भोजन, जल और विश्राम की आवश्यकता अनुभव ही नहीं हुई। ऐसी चरम तन्मय अवस्था में उनकी सभी शारीरिक क्रियाएं स्तब्ध हो गईं। उस समय श्रीकृष्ण का दर्शन रूपी अमृत ही उनका एकमात्र पोषक था। इसी प्रकार, भक्तों द्वारा गाए जा रहे कीर्तन ही श्रील गुरुदेव, जो कि एक तात्त्विक व्रजवासी हैं, उनके आहार का कार्य निभा रहे थे। उनके दिव्य शरीर पर आभा और मुखमण्डल पर प्रसन्नता उनके

आंतरिक आनंद की ही बाहरी अभिव्यक्ति थी।

27 अप्रैल को, कोलकाता के एक प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ, डॉ. शुभानन रे को श्रील गुरुदेव के स्वास्थ्य की जांच करने के लिए मठ में लाया गया। सबसे पहले तो वे श्रील गुरुदेव के दिव्य शरीर के असाधारण तेज को देखकर चकित रह गए। एक और बात ने उन्हें चौंका दिया जिसे अभिव्यक्त करते हुए उन्होंने कहा, "क्या किसी के

लिए इतने दिनों तक भोजन और दवाई के बिना, वह भी इतनी कम heart beat के साथ जीवन धारण करना संभव है?" इस तरह के एक असामान्य और अभूतपूर्व अनुभव पर उन्हें विश्वास नहीं हो पा रहा था। उन्होंने इसे चमत्कार कहा और आगे कहा कि यदि श्रील गुरुदेव का शरीर साधारण होता, तो यह संभव नहीं होता—अर्थात् यह असाधारण है। श्रील गुरुदेव की दिव्य स्थिति का वर्णन करने के लिए उनके पास उपयुक्त शब्द

नहीं , थे।

17 अप्रैल को, मैंने डॉ. बोरा (GNRC के चिकित्सक) को फ़ोन किया, यह बताने के लिए कि श्रील गुरुदेव इस धरातल से अपनी लीला समापन करने जा रहे हैं। मैं उनका आभार भी व्यक्त करना चाहता था, क्योंकि जब श्रील गुरुदेव वर्ष 2013 में एक महीने के लिए GNRC अस्पताल में भर्ती थे, तब उन्होंने हमें बहुत सहयोग दिया था। इससे पहले कि मैं उनके प्रति आभार व्यक्त

करता, डॉ. बोरा ने कहा, “गुरुजी कोई साधारण व्यक्ति नहीं हैं। उनमें कई अलौकिक शक्तियाँ हैं। मुझे उनकी सेवा और उनके चरण स्पर्श करने के अवसर देने के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ। मैं उनको प्रणाम करता हूँ।” ये सभी घटनाएं हमें स्पष्ट रूप से बताती हैं कि श्रील गुरुदेव ने सभी को किस स्तर तक प्रभावित और मंत्रमुग्ध किया।

दूसरी ओर, दिवा-रात्रि

अविरत चल रहे कीर्तनों ने भक्तों के भौतिक विचारों और चिंताओं को दूर तो कर दिया, किन्तु उन्होंने श्रील गुरुदेव से एक और चमत्कार की आशा भी नहीं छोड़ी, जिससे उनका स्वास्थ्य ठीक हो जाए। श्रील गुरुदेव के इस जगत् की लीलाओं के उन अंतिम क्षणों में, उन्हें संतुष्ट करने वाली कोई भी सेवा करना ही भक्तों का एकमात्र लक्ष्य था। शास्त्रों में से श्रील गुरुदेव के प्रिय प्रसंग पढ़ने और कीर्तन गाने के लिए भक्तों

की पंक्ति सब समय लगी रहती थी।

चाहे दिन हो या रात, सब समय, मठ के चारों ओर मृदंग, करताल और काँसा की ध्वनियों के साथ उच्च स्वर से नाम संकीर्तन की ध्वनि गूंजती रहती थी। इस पर, मठ के आस-पास के रहनेवाले लोगों ने कई बार आपत्ति जताई, क्योंकि इससे उनकी रात की निद्रा में बाधा होती थी। किन्तु भक्तों को श्रील गुरुदेव के प्रति अपना प्रेम

व्यक्त करने से रोक पाने में कुछ भी सक्षम नहीं था, जो उस समय बाहरी रूप से अत्यंत उत्साहपूर्ण कीर्तन के रूप में झलक रहा था। उस समय के पूरे वातावरण ने श्रीवास–आंगन का स्मरण दिला दिया, जहाँ श्रीगौर–सुंदर ने अपने पार्षदों के साथ पूरी रात महा–संकीर्तन लीला की थी। आज भी ऐसा प्रतीत होता है कि उन दिनों में कोलकाता मठ में श्रीवास–आंगन का अवतरण हुआ था। कीर्तन की सर्वोन्नत ध्वनि ने संसार की अन्य सभी

ध्वनियों और चिंताओं को भुला दिया। परिवेश पूरी तरह से रोमांचक और हृदय को शुद्ध करनेवाला था। उन दिनों, कोलकाता मठ में जो भाव चारों दिशाओं में संचारित हुए, उसे शब्दों में वर्णन करना असंभव है।

भक्त आशंकित थे कि कदाचित वे शीघ्र ही श्रील गुरुदेव के प्रत्यक्ष संग से वंचित हो सकते हैं, किन्तु वह भयभीत करनेवाले विचार भी उन्हें

संकीर्तन के द्वारा श्रील गुरुदेव की सेवा करने से विचलित नहीं कर पाए। वास्तव में, श्रील गुरुदेव ने स्वयं यह व्यवस्था की थी। जब वे इस धरातल पर अपनी लीला समापन कर नित्य-धाम में प्रवेश करेंगे, तब भक्तों को इस कारण से कोई कष्ट का अनुभव न हो, इसलिए उन्होंने इस प्रकार का एक अद्भुत अनुकूल वातावरण बना दिया। उनकी प्रत्येक लीला में यह देखा जाता है कि उन्होंने अपने दिव्य सान्निध्य में किसी

को भी किसी भी प्रकार के दुःख या चिंता का अनुभव नहीं होने दिया। निस्संदेह, वे वात्सल्य प्रेम की प्रतिमूर्ति हैं।

ऐसी महान् वात्सल्य मूर्ति को कोई भी व्यक्ति भला क्या अर्पित कर उनके प्रति अपना ऋण चुका सकता है? असंख्य जन्मों के लिए स्वयं को उनकी सेवा में पूर्ण रूप से समर्पित करने पर भी किसी के लिए यह कर पाना संभव नहीं होगा। भक्त इस बात को भली भाँति जानते

थे, इसलिए अभी तक उन्होंने श्रील गुरुदेव की सेवा के लिए जो कुछ किया था, उसे नगण्य मानते हुए वे उससे बिलकुल संतुष्ट नहीं थे। और, श्रील गुरुदेव की सेवा करने का छोटा-से-छोटा अवसर भी मिल जाता, तो वे उसे अतिशय उत्सुकता से स्वीकार करते थे। श्रील गुरुदेव की इस धरातल की अंतिम लीला के समय उनके निकट रहने का अवसर नहीं खोने के लिए भक्त कुछ भी करने के लिए तैयार थे—कोई

अपनी नौकरी छोड़ने के लिए, तो कोई अपनी विदेश यात्राओं को स्थगित करने के लिए। यहाँ तक कि माताओं का अपने घर पर छोड़े हुए बच्चों की ओर भी ध्यान नहीं था—किसी भी प्रकार की शारीरिक सुख–सुविधाओं या आवश्यकताओं पर ध्यान तो बहुत दूर की बात थी। भक्त अविरत कीर्तन कर रहे थे किन्तु उनके चेहरे पर थकान का कोई चिह्न तक नहीं दिखाई दे रहा था, बल्कि उनका उत्साह लगातार बढ़ता ही जा रहा था।

किसी को यह संदेह हो सकता है कि यह कैसे संभव था, किन्तु यह श्रील गुरुदेव ही थे जिन्होंने सभी को असाधारण बल प्रदान किया था– पियाइया प्रेम मत्त करि मोरे शुनो निज गुण गान।*

'कल्याण कल्पतरु' गीति में श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने लिखा– हे प्रभु! आप अपना प्रेम पिलाकर मुझे मत्त कर दीजिए तथा प्रेम की उन्मत्त अवस्था में मुझसे आप अपने गुणगान सुनिए।

Play Store

SrilaGurudeva

SGD